om-20a_Page 1 and 2 1/20/2014 7:58 PM Page 4

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान - मैं बाप समान सम्पूर्ण पवित्र आत्मा हूँ।

प्रथम सप्ताह

मैं परम पवित्र जगमगाती ज्योति हूँ। भृकुटी सिंहासन पर विराजमान मुझ पवित्र आत्मा से निरंतर निकल रहे पवित्र वायब्रेशन्स विश्व की सर्व दु:खी, अशांत आत्माओं को सुख, शांति की अंचली दे रहे हैं। सर्व आत्माएं आत्मिक शांति का अनुभव कर तृप्त हो रही हैं....प्रकृति के पांचों तत्व पावन बन रहे हैं...।

मैं मास्टर पवित्रता का सूर्य हूँ - मैं पवित्रता का सूर्य ग्लोब पर स्थित होकर संसार से अपवित्रता के अंधकार को दूर कर रहा हूँ। पवित्रता के सागर से पवित्रता की श्वेत रश्मियां मेरे ऊपर आ रही हैं और मुझसे चारो ओर फैल रही हैं। मैं परम पवित्र फरिश्ता इस देह से निकलकर फरिश्तों की दुनिया में चला जाता हूँ, जहां प्रकृति के पांचों तत्व हाथ जोड़कर मेरे सामने खड़े हैं। मैं बाबा से पवित्र किरणें लेकर उन्हें पावन बना रहा हूँ।

सदा याद रहे - मैं आत्मा इस धरती पर पवित्रता के वायब्रेशन्स फैलाने के लिए ही अवतरित हुई हूँ। पवित्रता, बापदादा से प्राप्त हुआ वरदान है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने के लिए छत्रछाया है। पवित्रता भविष्य 21 जन्मों के प्रालब्ध का आधार है। पवित्रता मुझ आत्मा का स्वधर्म है। पवित्रता का दान देना मुझ आत्मा का स्वभाव है। पवित्र दुनिया की स्थापना में मन्सा, वाचा, कर्मणा में तत्पर रहना मुझ आत्मा का श्रेष्ठ कर्तव्य है। पवित्रता मुझ आत्मा का मुख्य श्रृंगार है। पवित्र संकल्प ही मेरी बुद्धि का भोजन है। पवित्रता के सागर शिवबाबा ने स्वयं मुझे पवित्र दुनिया के महान कार्य को पूर्ण करने के निमित्त बनया है...।

धारणा - व्यर्थ से पूरी तरह मुक्त, सदा समर्थ - बाबा ने कहा, बच्चे व्यर्थ में चले जाते हैं। संकल्प, समय, श्वांस, शक्तियां, गुण आदि कई खजाने व्यर्थ ही चले जाते हैं। इसलिए हम बापदादा से दिल से प्रतिज्ञा करें - प्यारे बाबा हम व्यर्थ में नहीं जायेंगे, न व्यर्थ सोचेंगे, न व्यर्थ बोलेंगे, न व्यर्थ समय गवायेंगे, न व्यर्थ सुनेंगे, न व्यर्थ देखेंगे। मीठे शिव बाबा हम सदा व्यर्थ से मुक्त रह समर्थ स्थिति बनाकर अपने चलन और चेहरे से आपकी प्रत्यक्षता करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। इस प्रतिज्ञा को रोज अमृतवेले बाबा के सम्मुख दोहराएंगे और दिन में विशेष अटेंशन रख अपने पुरुषार्थ में मस्त रहेंगे, अन्तर्मुखी होकर अतीन्द्रिय सुख के अनुभव में खोए रहेंगे। दृष्टि में आत्मिक भाव, मन्सा में शुभ भावना, बोल में मधुरता और कर्म में सबको संतुष्ट करने की भावना हो।

विशेष - निमित्त आत्माओं के वायब्रेशन्स चारो ओर फैलते हैं इसलिए अभी आत्माओं को एक्स्ट्रा सकाश दो। हम सकाश देने में इतना व्यस्त हो जाएं कि स्वप्न में भी सम्पूर्ण पवित्रता का सकाश पूरे विश्व में फैलता रहे...। जरा भी फुर्सत मिलने पर सकाश देने में बिजी रहें।

स्वमान - मैं बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण हूँ।

द्वितीय सप्ताह

बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण अर्थात जो बाप में गुण और शक्तियाँ हैं वही मुझमें हैं..जो बाप के संकल्प, बोल और कर्म हैं वही मेरे भी हों...जो बाप के संस्कार वही मेरे भी संस्कार। यदि बाप को प्रत्यक्ष करना है तो जैसे बाप सम्पन्न और सम्पूर्ण है ऐसे बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनकर पहले स्व को प्रत्यक्ष करें। जब स्व को प्रत्यक्ष करेंगे तो बाप स्वत: ही प्रत्यक्ष हो जायेगा।

योगाभ्यास - रुहानी एक्सरसाइज़। जैसे शरीर को शक्तिशाली बनाने के लिए शारीरिक एक्सरसाइज़ आवश्यक है, ऐसे ही मन को शक्तिशाली बनाने के लिए मानसिक एक्सरसाइज़ भी आवश्यक है - इसके लिए हर घण्टे में कम से कम पांच मिनट में पांच स्वरूपों का अभ्यास करो - पहले स्वयं को परमधाम में ज्ञानसूर्य की किरणों के नीचे देखें..फिर सूक्ष्म वतन में स्वयं को फरिश्ता रूप में देखें..फिर अपने पूज्य स्वरूप को याद करें..फिर अपने ब्राह्मण स्वरूप को याद करें..फिर अपने देवता स्वरूप को देखें। सारे दिन में यह अभ्यास चलते-फिरते भी कर सकते हैं..इससे मन में खुशी रहेगी, उमंग-उत्साह बढ़ेगा और सदा उड़ती कला का अनुभव होता रहेगा।

धारणा - दुआएं लो और दुआएं दो। सबसे सहज पुरुषार्थ है - दुआएं दो और दुआएं लो। इसके लिए सर्व के प्रति अपनी शुभ भावनाओं को श्रेष्ठ रखो। कोई भी निगेटिव बात मन में नहीं रखो। यदि कोई किसी की निगेटिव बात को सुनाता भी है तो एक कान से सुन दूसरे से निकाल दो। अपनी श्रेष्ठ वृत्ति के वायब्रेशन्स द्वारा वायुमण्डल को ऐसा बनाओ जो कोई भी आपके सामने आए तो वह कुछ न कुछ स्नेह और सहयोग का अनुभव करे, क्षमा का अनुभव करे..हिम्मत का अनुभव करे..उमंग-उत्साह का अनुभव करे..।

चिन्तन- पुरुषार्थ में तीव्रता न होने का कारण..? सदा तीव्र पुरुषार्थी कैसे बनें? तीव्र पुरुषार्थी आत्माओं की निशानियाँ क्या हैं? साधकों के प्रति - अब बापदादा समय की तीव्र गति प्रमाण हम सभी बच्चों को सदा तीव्र पुरुषार्थी के रूप में देखना चाहते हैं। तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् सोचना और करना एक समान हो। याद रहे यदि हम अभी तक भी सोचने, एक दूसरे को देखने में समय गंवाते रहें तो भविष्य की प्राप्ति से वंचित रह जाएंगे...इसलिए अब आलस्य और अलबेलेपन के संकल्पों को त्याग मन में सदा यही दृढ़ता रहे कि जो करना है वह अभी करना है। अभी नहीं तो कभी नहीं...तब कहेंगे...सच्चे-सच्चे तीव्र पुरुषार्थी आत्मा।

क्या आप बापदादा की आशाओं को पूर्ण करना चाहते हैं? यदि हाँ तो कारण और समस्या शब्द को नये वर्ष में विदाई दे दो। दृढ़ प्रतिज्ञा करो कि हम कोई भी कारण नहीं निकालेंगे और न ही हम समस्या स्वरूप बनेंगे। इसके लिए चाहे हमें झुकना पड़े, सहन करना पड़े, मरना पड़े लेकिन अब निवारण और समाधान स्वरूप बनकर प्राण प्यारे बापदादा के साथ इस वर्ष को न्यारा और सर्व का प्यारा, मेहनत से मुक्त और समस्याओं से मुक्त वर्ष के रूप में मनाना है।

पिताश्री के साथ के अविस्मरणीय पल

पिताश्री जी ने मुझे 'विद्वान विजय लक्ष्मी' कहा

ब्र.कु. विजय बहन कहती है कि मैं बचपन से ही श्रीकृष्ण की भक्ति करती थी। घर में गीता, रामायण पढ़ते थे। प्रार्थना करती थी, ''हे श्री कृष्ण भगवान, मुझे अपने पास बुला लो। मुझे अपनी दुनिया में क्यों नहीं बुलाया, जहाँ आपके अंग-संग रहने वाले गोप-गोपियों ने इतना अतीन्द्रिय सुख पाया।'' मन में यही तीव्र इच्छा बनी रही। एक दिन हमारे पड़ोस की एक बहन नांगल से यह ज्ञान सुनकर अपने घर आयी थी और साथ में त्रिमूर्ति का चित्र तथा मुरलियाँ लायी थी। एक दिन उस बहन ने त्रिमूर्ति के चित्र में ब्रह्मा बाबा का फोटो दिखाते हुए कहा कि इस ब्रह्मा-तन में शिव परमात्मा आकर यह ज्ञान सुनाते हैं, यह मुरली है। ब्रह्मा बाबा का चित्र देखते ही ऐसा अनुभव हुआ कि मैं इस बाबा से कई बार पहले भी मिली हूँ और जैसे इन मुरलियों को पढ़ती रही हूँ। चित्र देखते-देखते मैं गुम हो गयी और इस देह की दुनिया को ही भूल किसी दूसरे लोक में पहुँच गयी। जब बाबा दिल्ली में मेजर भाई की कोठी पर आये तब लौकिक पिता जी के साथ मैं भी बाबा से मिलने गयी। बाबा की दृष्टि पड़ते ही बहुत लाइट-माइट का अनुभव हुआ। पिताश्री जी से अलौकिक, पारलौकिक बाबा के बेहद प्यार का अनुभव हुआ, फिर बाबा की दृष्टि ने वतन में उड़ा दिया। सन् 1963 में पहली बार मुधबन बाबा से मिलने गयी। एक दिन सुबह की मुरली में बाबा ने कहा मि तुम बच्चे ही विद्वान भी हो, पंडित भी हो। उसी दिन रात्रि को बाबा के साथ भोजन कर रहे थे तो बाबा अपने हाथों से मुझे गिट्टी देते हुए बोले - बच्ची, तुम पंडित, विद्वान विजय लक्ष्मी हो। जैसे कि बाबा ने मेरे में विद्वता भर दी। बच्चों के साथ बाबा जब चलते थे तो कभी-कभी खड़े होकर दृष्टि देते थे, तब ऐसे लगता था कि बाबा जैसे दूर-दूर कुछ आत्माओं के जन्मों को परख रहे हैं।

ब्र.कु.विजय जिन्द सेवाकेंद्र संचालिका, ब्रह्माकुमारीज़

सम्पीगे चिकबनवारा-कर्नाटक। नवनिर्मित राजयोगा केन्द्र का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.पदमा, डॉ. ए.सी.श्रीराम,नल्लिगे ग्रुप चेयरमेन, बायलप्पा भाई,चीफ कॉन्ट्रैक्टर, ब्र.कु.अण्णा, ब्र.कु.रूपा, ब्र.कु.सुमा, ब्र.कु.जयलक्ष्मी तथा अन्य।

बरेली-उ.प्र.। ग्रामीण महिला सशक्तिकरण अभियान को झण्डी दिखाकर रवाना करते हुए जिला विकास अधिकारी डॉ. श्याम कुमार सिंह। साथ हैं ब्र.कु.पार्वती, ब्र.कु.नीता, ब्र.कु.दीपा, रसपाल राजपूत, ब्र.कु.उमेश तथा अन्य।

बेरहमपुर-ओडीशा। इण्डियन रेयर अर्थ लिमिटेड ऑफ एटॉमिक एनर्जी में एक्ज़िक्यूटिव्स, डी.जी.एम. तथा सी.जी.एम. के लिए आयोजित स्ट्रेस मैनेजमेंट प्रोग्राम में चीफ जनरल मैनेजर धीरेन मोहन्ती, ब्र.कु.माला तथा ब्र.कु.सितार।

वलसाड। इंजीनियरिंग कॉलेज के प्रिन्सीपल व प्रोफेसर्स के लिए आयोजित कर्मयोगी तालीम शिविर में कर्मयोग पर प्रवचन करते हुए ब्र.कु.रोहित।

नगर-भरतपुर। विधायक अनीता सिंह को ज्ञान चर्चा के पश्चात् ओमशांति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु.हीरा। साथ हैं ब्र.कु.संध्या तथा ब्र.कु.तारेश।

सिवान-बिहार। ब्रह्माकुमारीज़ सेन्टर के वार्षिकोत्सव पर कैंडल लाइटिंग करते हुए जे.डी.यू. लीडर अजय सिंह, ब्र.कु.सुधा तथा अन्य।